

سُورَةُ النَّامِلِ

Surah 27 — An-Naml (The Ant) · Meccan · 93 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طس ﴿١﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ

ता सीन ये कुरान वाजेए व रौशन किताब की आयतें है

2

هُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ

(ये) उन ईमानदारों के लिए (अज़सरतापा) हिदायत और (जन्नत की) खुशखबरी है

3

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

जो नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और ज़कात दिया करते हैं और यही लोग आखिरत (क़यामत) का भी यक़ीन रखते हैं

4

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيْنًا لَّهُمْ أَعْمَلُهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ

इसमें शक नहीं कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते (गोया) हमने खुद (उनकी कारस्तानियों को उनकी नज़र में) अच्छा कर दिखाया है

5

أَوَلَيْكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي آلِ آخِرَةِ هُمْ الْآخِسُونَ

तो ये लोग भटकते फिरते हैं- यही वह लोग हैं जिनके लिए (क़यामत में) बड़ा अज़ाब है और यही लोग आखिरत में सबसे ज्यादा घाटा उठाने वाले हैं

6

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ

और (ऐ रसूल) तुमको तो कुरान एक बड़े वाक्फ़िकार हकीम की बारगाह से अता किया जाता है

7

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ ۖ إِنِّي ۖ ءَانَسْتُ نَارًا ۖ ۱ سَأَتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ ءَاتِيكُمْ بِشِهَابٍ ۖ
قَبَسٍ ۖ ۲ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ

(वह वाकिया याद दिलाओ) जब मूसा ने अपने लड़के बालों से कहा कि मैंने (अपनी बायीं तरफ) आग देखी है (एक ज़रा ठहरो तो) मैं वहाँ से कुछ (राह की) खबर लाऊँ या तुम्हें एक सुलगता हुआ आग का अंगारा ला दूँ ताकि तुम तापो

8

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ ۖ ۳ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلْعَالَمِينَ

गरज़ जब मूसा इस आग के पास आए तो उनको आवाज़ आयी कि मुबारक है वह जो आग में (तजल्ली दिखाना) है और जो उसके गिर्द है और वह खुदा सारे जहाँ का पालने वाला है

9

يُمُوسَىٰ ۖ إِنَّهُ ۖ ۴ أَنَا ٱللَّهُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ

(हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है- ऐ मूसा इसमें शक नहीं कि मैं ज़बरदस्त हिकमत वाला हूँ

10

وَأَلْقِ عَصَاكَ ۖ ۵ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ ۖ ۶ وَلَّىٰ مُدَبِّرًا ۖ ७ وَلَمْ يُعَقِّبْ ۖ ८ يُمُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَى ٱلْمُرْسَلُونَ

और (हाँ) अपनी छड़ी तो (ज़मीन पर) डाल दो तो जब मूसा ने उसको देखा कि वह इस तरह लहरा रही है गोया वह जिन्दा अज़दहा है तो पिछले पावँ भाग चले और पीछे मुड़कर भी न देखा (तो हमने कहा) ऐ मूसा डरो नहीं हमारे पास पैग़म्बर लोग डरा नहीं करते हैं

11

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا ۖ ९ بَعْدَ سُوءٍ ۖ १० فَإِنِّي غَفُورٌ ۖ ११ رَحِيمٌ ۖ

(मुतमइन हो जाते हैं) मगर जो शरूस गुनाह करे फिर गुनाह के बाद उसे नेकी (तौबा) से बदल दे तो अलबत्ता बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हूँ

12

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۖ १२ ۖ १३ فِي تِسْعِ ءَايَاتٍ ۖ १४ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ ۖ १५ إِنَّهُمْ كَانُوا ۖ १६ قَوْمًا ۖ १७ فَسِقِينَ

(वहाँ) और अपना हाथ अपने ग़रेबों में तो डालो कि वह सफ़ेद बुराक़ होकर बेऐब निकल आएगा (ये वह मौजिज़े) मिन जुमला नौ मौजिज़ात के हैं जो तुमको मिलेंगे तुम फिरौन और उसकी क्रौम के पास (जाओ) क्योंकि वह बदकिरदार लोग हैं

13

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ ءَايَتُنَا مُبْصِرَةً ۖ قَالُوا ۚ هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۚ

तो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देने वाले मैजिज़े आए तो कहने लगे ये तो खुला हुआ जादू है

14

وَجَحَدُوا ۚ بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا ۖ وَعُلُوًّا ۚ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِينَ

और बावजूद के उनके दिल को उन मौजिज़ात का यक़ीन था मगर फिर भी उन लोगों ने सरकशी और तकबुर से उनको न माना तो (ऐ रसूल) देखो कि (आखिर) मुफसिदों का अन्जाम क्या होगा

15

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا دَاوُۡدَ ۖ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ ۚ وَقَالَ الْחَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَثِيرٍ ۚ
مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ

और इसमें शक नहीं कि हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म अता किया और दोनों ने (खुश होकर) कहा खुदा का शुक्र जिसने हमको अपने बहुतेरे ईमानदार बन्दों पर फज़ीलत दी

16

وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُۡدَ ۖ ۚ وَقَالَ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ ۖ عُلِّمْنَا مَنطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِن كُلِّ
شَيْءٍ ۚ ۚ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ

और (इल्म हिक्मत जाएदाद (मनकूला) ग़ैर मनकूला सब में) सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा कि लोग हम को (खुदा के फज़ल से) परिन्दों की बोली भी सिखायी गयी है और हमें (दुनिया की) हर चीज़ अता की गयी है इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनी (खुदा का) सरीही फज़ल व करम है

17

وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ ۖ ۚ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ

और सुलेमान के सामने उनके लश्कर जिन्नात और आदमी और परिन्दे सब जमा किए जाते थे

حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا ۚ عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ ۚ يَأَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا ۚ مَسْكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٌ وَجُنُودُهُ ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

तो वह सबके सब (मसल मसल) खड़े किए जाते थे (गरज इस तरह लश्कर चलता) यहाँ तक कि जब (एक दिन) चींटियों के मैदान में आ निकले तो एक चीटी बोली ऐ चींटियों अपने अपने बिल में घुस जाओ- ऐसा न हो कि सुलेमान और उनका लश्कर तुम्हें रौन्द डाले और उन्हें उसकी खबर भी न हो

فَتَبَسَّ ضَاحِكًا ۚ مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَلَدِي وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا ۚ تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ

तो सुलेमान इस बात से मुस्कुरा के हँस पड़े और अर्ज की परवरदिगार मुझे तौफीक अता फरमा कि जैसी जैसी नेअमते तूने मुझ पर और मेरे वालदेन पर नाज़िल फरमाई हैं मैं (उनका) शुक्रिया अदा करूँ और मैं ऐसे नेक काम करूँ जिसे तू पसन्द फरमाए और तू अपनी खास मेहरबानी से मुझे (अपने) नेकोकार बन्दों में दाखिल कर

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدُودَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ

और सुलेमान ने परिन्दों (के लश्कर) की हाज़िरी ली तो कहने लगे कि क्या बात है कि मैं हुदहुद को (उसकी जगह पर) नहीं देखता क्या (वाकई में) वह कही गायब है

لَأُعَذِّبَنَّهُ ۚ عَذَابًا ۚ شَدِيدًا أَوْ لَأَأَذِيبَنَّ ۚ أَوْ لِيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَنٍ ۚ مُّبِينٍ ۚ

(अगर ऐसा है तो) मैं उसे सख्त से सख्त सज़ा दूँगा या (नहीं तो) उसे ज़बाह ही कर डालूँगा या वह (अपनी बेगुनाही की) कोई साफ दलील मेरे पास पेश करे

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۚ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ ۚ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ ۚ بِنَبَأٍ ۚ يَقِينٍ

गरज सुलेमान ने थोड़ी ही देर (तबक्कुफ़ किया था कि (हुदहुद) आ गया) तो उसने अर्ज की मुझे यह बात मालूम हुई है जो अब तक हुज़ूर को भी मालूम नहीं है और आप के पास शहरे सबा से एक तहक़ीकी खबर लेकर आया हूँ

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً ۚ تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۚ

मैंने एक औरत को देखा जो वहाँ के लोगों पर सलतनत करती है और उसे (दुनिया की) हर चीज़ अता की गयी है और उसका एक बड़ा तख्त है

وَجَدَتْهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَلُهُمْ
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ

मैंने खुद मलका को देखा और उसकी कौम को देखा कि वह लोग खुदा को छोड़कर आफताब को सजदा करते हैं शैतान ने उनकी करतूतों को (उनकी नज़र में) अच्छा कर दिखाया है और उनको राहे रास्त से रोक रखा है

أَلَّا يَسْجُدُوا؟ لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبَاءَ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا
تُعْلِنُونَ

तो उन्हें (इतनी सी बात भी नहीं सूझती) कि वह लोग खुदा ही का सजदा क्यों नहीं करते जो आसमान और ज़मीन की पोशीदा बातों को ज़ाहिर कर देता है और तुम लोग जो कुछ छिपाकर या ज़ाहिर करके करते हो सब जानता है

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ؟

अल्लाह वह है जिससे सिवा कोई माबूद नहीं वही (इतने) बड़े अर्श का मालिक है (सजदा)

؟ قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَذَّابِينَ

(गरज़) सुलेमान ने कहा हम अभी देखते हैं कि तूने सच सच कहा या तू झूठा है

أَذْهَبَ بِكِتَابِي هَذَا فَأَلْقَاهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ

(अच्छा) हमारा ये खत लेकर जा और उसको उन लोगों के सामने डाल दे फिर उन के पास से जाना फिर देखते रहना कि वह लोग अखिर क्या जवाब देते हैं

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُو؟ إِنِّي أَلْقَيْتُ إِلَيْكَ كِتَابٌ؟ كَرِيمٌ

(गरज़) हुद हुद ने मलका के पास खत पहुँचा दिया तो मलका बोली ऐ (मेरे दरबार के) सरदारों ये एक वाजिबुल एहताराम खत मेरे पास डाल दिया गया है

إِنَّهُ ۖ مِنْ سُلَيْمٍ وَإِنَّهُ ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सुलेमान की तरफ से है (ये उसका सरनामा) है बिस्मिल्लाहिररहमानिरहीम

أَلَّا تَعْلُوا ۚ عَلَىٰ وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ

(और मज़मून) यह है कि मुझ से सरकशी न करो और मेरे सामने फरमाबरदार बन कर हाज़िर हो

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ ۖ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ

तब मलका (विलक्रीस) बोली ऐ मेरे दरबार के सरदारों तुम मेरे इस मामले में मुझे राय दो (क्योंकि मेरा तो ये कायदा है कि) जब तक तुम लोग मेरे सामने मौजूद न हो (मशवरा न दे दो) मैं किसी अम्र में कतई फैसला न किया करती

قَالُوا ۖ نَحْنُ أَوْ ۖ لَوْ ۖ قُوَّةٌ ۖ وَأَوْ ۖ لَوْ ۖ بِأَسٍ ۖ شَدِيدٍ ۖ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ

उन लोगों ने अर्ज की हम बड़े ज़ोरावर बड़े लड़ने वाले हैं और (आइन्दा) हर अम्र का आप को एख्तियार है तो जो हुक्म दे आप (खुद अच्छी) तरह इसके अन्जाम पर गौर कर ले

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا ۖ قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا ۖ أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۖ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ

मलका ने कहा बादशाहों का कायदा है कि जब किसी बस्ती में (बज़ोरे फ़तेह) दाखिल हो जाते हैं तो उसको उजाड़ देते हैं और वहाँ के मुअज़िज़ लोगों को ज़लील व रुसवा कर देते हैं और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ ۖ فَنَاظِرَةٌ ۖ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ

और मैं उनके पास (एलचियों की माअरफ़त कुछ तोहफा भेजकर देखती हूँ कि एलची लोग क्या जवाब लाते हैं) गरज़ जब बिलक्रीस का एलची (तोहफा लेकर) सुलेमान के पास आया

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَنُ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ ۚ فَمَا آتَيْنِ ٱللَّهَ خَيْرٌۭ ۚ مِّمَّا آتٰكُمۡ بَلْ اَنْتُمْ
بِهَدٰیَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ

तो सुलेमान ने कहा क्या तुम लोग मुझे माल की मदद देते हो तो खुदा ने जो (माल दुनिया) मुझे अता किया है वह (माल) उससे जो तुम्हें बख्शा है कहीं बेहतर है (मैं तो नहीं) बल्कि तुम्ही लोग अपने तोहफे तहायफ़ से खुश हुआ करो

اَرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمۡ بِجُنُوْدٍ ۚ لَا قِبَلَ لَهُمۡ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمۡ مِّنْهَا اَذِلَّةً ۚ وَهُمْ
صٰغِرُوْنَ

(फिर तोहफा लाने वाले ने कहा) तो उन्हीं लोगों के पास जा हम यक़ीनन ऐसे लश्कर से उन पर चढ़ाई करेंगे जिसका उससे मुकाबला न हो सकेगा और हम ज़रूर उन्हें वहाँ से ज़लील व रुसवा करके निकाल बाहर करेंगे

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلٰٓئِكَةُ اِيْكُمْ يٰتِيْنِيۡ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيۡ مُسْلِمِيْنَ

(जब वह जा चुका) तो सुलेमान ने अपने अहले दरबार से कहा ऐ मेरे दरबार के सरदारो तुममें से कौन ऐसा है कि कबल इसके वह लोग मेरे सामने फरमाबरदार बनकर आयें

قَالَ عِفْرِیْتُ ۚ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا ۚ ءَاتِيْكَ بِهِ ۚ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّیۡ عَلَیْهِ
لَقَوِیُّۭۤۤا۟ اٰمِیْنٌ ۚ

मलिका का तख्त मेरे पास ले आए (इस पर) जिनों में से एक दियो बोल उठा कि कबल इसके कि हुज़ूर (दरबार बरखास्त करके) अपनी जगह से उठे मैं तख्त आपके पास ले आऊँगा और यक़ीनन उस पर काबू रखता हूँ (और) ज़िम्मेदार हूँ

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا ؕ أَتَيْكَ بِهِ ؕ قَبْلَ أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ
 فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ ؕ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ؕ أَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ؕ وَمَنْ
 شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌ كَرِيمٌ ؕ

इस पर अभी सुलेमान कुछ कहने न पाए थे कि वह शख्स (आसिफ़ बिन बरखिया) जिसके पास किताबे (खुदा) का किस कदर इल्म था बोला कि मैं आप की पलक झपकने से पहले तख्त को आप के पास हाज़िर किए देता हूँ (बस इतने ही में आ गया) तो जब सुलेमान ने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे ये महज़ मेरे परवरदिगार का फज़ल व कर्म है ताकि वह मेरा इम्तेहान ले कि मैं उसका शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ और जो कोई शुक्र करता है वह अपनी ही भलाई के लिए शुक्र करता है और जो शख्स ना शुक्री करता है तो (याद रखिए) मेरा परवरदिगार यकीनन बेपरवा और सखी है

قَالَ نَكِّرُوا ؕ لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرُ أَتَهْتَدِيْ أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ

(उसके बाद) सुलेमान ने कहा कि उसके तख्त में (उसकी अक्ल के इम्तिहान के लिए) तग़य्युर तबददुल कर दो ताकि हम देखें कि फिर भी वह समझ रखती है या उन लोगों में है जो कुछ समझ नहीं रखते

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهْكَذَا عَرْشُكَ ؕ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ؕ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا
 مُسْلِمِينَ

(चुनान्चे ऐसा ही किया गया) फिर जब बिलक़ीस (सुलेमान के पास) आयी तो पूछा गया कि तुम्हारा तख्त भी ऐसा ही है वह बोली गोया ये वही है (फिर कहने लगी) हमको तो उससे पहले ही (आपकी नुबूवत) मालूम हो गयी थी और हम तो आपके फ़रमाबरदार थे ही

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ؕ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ

और खुदा के सिवा जिसे वह पूजती थी सुलेमान ने उससे उसे रोक दिया क्योंकि वह काफिर क़ौम की थी (और आफताब को पूजती थी)

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً ۚ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ ۚ صَرْحٌ ۚ مُّمَرَّدٌ ۚ مِّن قَوَارِيرَ ۚ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

फिर उससे कहा गया कि आप अब महल में चलिए तो जब उसने महल (में शीशे के फर्श) को देखा तो उसको गहरा पानी समझी (और गुजरने के लिए इस तरह अपने पाएचे उठा लिए कि) अपनी दोनों पिन्डलियाँ खोल दी सुलेमान ने कहा (तुम डरो नहीं) ये (पानी नहीं है) महल है जो शीशे से मढ़ा हुआ है (उस वक्त तम्बीह हुई और) अर्ज की परवरदिगार मैंने (आफताब को पूजा कर) यक्रीनन अपने ऊपर जुल्म किया

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ

और अब मैं सुलेमान के साथ सारे जहाँ के पालने वाले खुदा पर ईमान लाती हूँ और हम ही ने क्रौम समूद के पास उनके भाई सालेह को पैगम्बर बनाकर भेजा कि तुम लोग खुदा की इबादत करो तो वह सालेह के आते ही (मोमिन व काफिर) दो फरीक बनकर बाहम झगड़ने लगे

قَالَ يَاقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

सालेह ने कहा ऐ मेरी क्रौम (आखिर) तुम लोग भलाई से पहल बुराई के वास्ते जल्दी क्यों कर रहे हो तुम लोग खुदा की बारगाह में तौबा व अस्तगफार क्यों नहीं करते ताकि तुम पर रहम किया जाए

قَالُوا ۚ أَطِيعْنَا بِكَ وَيَمَنُ مَعَكَ ۚ قَالَ طَئِرُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ

वह लोग बोले हमने तो तुम से और तुम्हारे साथियों से बुरा शगुन पाया सालेह ने कहा तुम्हारी बदकिस्मती खुदा के पास है (ये सब कुछ नहीं) बल्कि तुम लोगों की आजमाइश की जा रही है

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ ۚ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ

और शहर में नौ आदमी थे जो मुल्क के बानीये फसाद थे और इसलाह की फिक्र न करते थे-उन लोगों ने (आपस में) कहा कि बाहम खुदा की कसम खाते जाओ

قَالُوا ۖ تَقَاسَمُوا ۖ بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ ۖ وَأَهْلَهُ ۖ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ ۖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ ۖ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ

कि हम लोग सालेह और उसके लड़के बालो पर शब खून करे उसके बाद उसके वाली वारिस से कह देंगे कि हम लोग उनके घर वालों को हलाक़ होते वक्त मौजूद ही न थे और हम लोग तो यकीनन सच्चे हैं

وَمَكْرُوا ۖ مَكْرًا ۖ وَمَكْرَنَا مَكْرًا ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

और उन लोगों ने एक तदबीर की और हमने भी एक तदबीर की और (हमारी तदबीर की) उनको खबर भी न हुई

فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَا دَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ

तो (ऐ रसूल) तुम देखो उनकी तदबीर का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ कि हमने उनको और सारी क्रौम को हलाक़ कर डाला

فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةٌ ۖ بِمَا ظَلَمُوا ۖ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

ये बस उनके घर हैं कि उनकी नाफरमानियों की वज़ह से खाली वीरान पड़े हैं इसमें शक नहीं कि उस वाकिये में वाक़िफ़ कार लोगों के लिए बड़ी इब्रत है

وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَكَانُوا يَتَّقُونَ

और हमने उन लोगों को जो ईमान लाए थे और परहेज़गार थे बचा लिया

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ ۖ أَتَأْتُونَ الْفَحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ

और (ऐ रसूल) लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि क्या तुम देखभाल कर (समझ बूझ कर) ऐसी बेहयाई करते हो

أَإِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً ۖ مِّنْ دُونِ النِّسَاءِ ۖ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ

क्या तुम औरतों को छोड़कर शहवत से मर्दों के आते हो (ये तुम अच्छा नहीं करते) बल्कि तुम लोग बड़ी जाहिल क्रौम हो तो लूत की क्रौम का इसके सिवा कुछ जवाब न था

56

﴿ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ ۖ إِلَّا أَنْ قَالُوا ۖ أَخْرِجُوا ۖ ءَالَ لُوطٍ ۖ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ
 أَنَاسٌ ۖ يَتَطَهَّرُونَ ﴾

कि वह लोग बोल उठे कि लूत के खानदान को अपनी बस्ती (सदूम) से निकाल बाहर करो ये लोग बड़े पाक साफ बनना चाहते हैं

57

﴿ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ ۖ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ قَدَرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴾

गरज हमने लूत को और उनके खानदान को बचा लिया मगर उनकी बीवी कि हमने उसकी तकदीर में पीछे रह जाने वालों में लिख दिया था

58

﴿ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ﴾

और (फिर तो) हमने उन लोगों पर (पत्थर का) मेंह बरसाया तो जो लोग डराए जा चुके थे उन पर क्या बुरा मेंह बरसा

59

﴿ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۖ ءَالِلُهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴾

(ऐ रसूल) तुम कह दो (उनके हलाक होने पर) खुदा का शुक्र और उसके बरगुज़ीदा बन्दों पर सलाम भला खुदा बेहतर है या वह चीज़ जिसे ये लोग शरीके खुदा कहते हैं

60

﴿ أَمَّنْ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَنْبَتْنَا بِهِ ۖ حَدَائِقَ
 ذَاتَ بَهْجَةٍ ۖ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا ۖ شَجَرَهَا ۖ ءَالِلُهُ ۖ مَعَ اللَّهِ ۖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
 يَعْدِلُونَ ﴾

भला वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने पानी से दिल चस्प (खुशनुमा) बाग़ उठाए तुम्हारे तो ये बस की बात न थी कि तुम उनके दरख्तों को उगा सकते तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग खुद अपने जी से गढ़ के बुतों को उसके बराबर बनाते हैं

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا ۚ وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَرًا ۚ وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ أَعَلَّهُ ۚ مَعَ اللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

भला वह कौन है जिसने ज़मीन को (लोगों के) ठहरने की जगह बनाया और उसके दरमियान जा बजा नहरें दौड़ायी और उसकी मजबूती के वास्ते पहाड़ बनाए और (मीठे खारी) दरियाओं के दरमियान हृदे फासिल बनाया तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि उनमें के अकसर कुछ जानते ही नहीं

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۚ أَعَلَّهُ ۚ مَعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا ۚ مَا تَذَكَّرُونَ

भला वह कौन है कि जब मुज़तर उसे पुकारे तो दुआ कुबूल करता है और मुसीबत को दूर करता है और तुम लोगों को ज़मीन में (अपना) नायब बनाता है तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद है (हरगिज़ नहीं) उस पर भी तुम लोग बहुत कम नसीहत व इब्रत हासिल करते हो

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيْحَ بُشْرًا ۚ بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ ۚ أَعَلَّهُ ۚ مَعَ اللَّهِ ۚ تَعْلَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ

भला वह कौन है जो तुम लोगों की खुशकी और तरी की तारिकियों में राह दिखाता है और कौन उसकी बाराने रहमत के आगे आगे (बारिश की) खुशखबरी लेकर हवाओं को भेजता है-क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) ये लोग जिन चीज़ों को खुदा का शरीक ठहराते हैं खुदा उससे बालातर है

أَمَّنْ يَبْدُو ۚ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ أَعَلَّهُ ۚ مَعَ
اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

भला वह कौन हैं जो खिलकत को नए सिरे से पैदा करता है फिर उसे दोबारा (मरने के बाद) पैदा करेगा और कौन है जो तुम लोगों को आसमान व ज़मीन से रिज़क देता है- तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) (ऐ रसूल) तुम (इन मुशरेकीन से) कहा दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो

65

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ

(ऐ रसूल इन से) कह दो कि जितने लोग आसमान व ज़मीन में हैं उनमें से कोई भी गैब की बात के सिवा नहीं जानता और वह भी तो नहीं समझते कि कब्र से दोबारा कब ज़िन्दा उठ खड़े किए जाएंगे

66

بَلِ أَدْرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلِ هُمْ فِي شَكٍّ ۚ مِنْهَا ۚ بَلِ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ

बल्कि (असल ये है कि) आखिरत के बारे में उनके इल्म का ख़ात्मा हो गया है बल्कि उसकी तरफ से शक में पड़े हैं बल्कि (सच ये है कि) इससे ये लोग अंधे बने हुए हैं

67

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَءِذَا كُنَّا تُرَابًا ۚ وَءَابَاؤُنَا ۚ أَأَنَّا لَمُخْرَجُونَ

और कुफ़ार कहने लगे कि क्या जब हम और हमारे बाप दादा (सड़ गल कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम फिर निकाले जाएंगे

68

لَقَدْ وَعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ ۚ وَءَابَاؤُنَا ۚ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا أَسْطِيرُ الْأَوَّلِينَ

उसका तो पहले भी हम से और हमारे बाप दादाओं से वायदा किया गया था (कहाँ का उठना और कैसी क़यामत) ये तो हो न हो अगले लोगों के ढकोसले हैं

69

قُلْ سِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا ۚ كَيْفَ كَانَ عِقَابُ الْمُجْرِمِينَ

(ऐ रसूल) लोगों से कह दो कि रुए ज़मीन पर ज़रा चल फिर कर देखो तो गुनाहगारों का अन्जाम क्या हुआ

70

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ ۚ مِمَّا يَمْكُرُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनके हाल पर कुछ अफ़सोस न करो और जो चालें ये लोग (तुम्हारे खिलाफ) चल रहे हैं उससे तंग दिल न हो

71

وَيَقُولُونَ مَتَى هَٰذَا الْوَعْدُ ۖ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

और ये (कुफ़ार मुसलमानों से) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आखिर) ये (क़यामत या अज़ाब का) वायदा कब पूरा होगा

قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि जिस (अज़ाब) की तुम लोग जल्दी मचा रहे हो क्या अजब है इसमे से कुछ करीब आ गया हो

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ

और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों पर बड़ा फज़ल व करम करने वाला है मगर बहुतेरे लोग (उसका) शुक्र नहीं करते

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ

और इसमें तो शक नहीं जो बातें उनके दिलों में पोशीदा हैं और जो कुछ ये एलानिया करते हैं तुम्हारा परवरदिगार यकीनी जानता है

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ ۚ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ

और आसमान व ज़मीन में कोई ऐसी बात पोशीदा नहीं जो वाज़ेए व रौशन किताब (लौहे महफूज़) में (लिखी) मौजूद न हो

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَقْصُّ عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ

इसमें भी शक नहीं कि ये कुरान बनी इसराइल पर उनकी अक्सर बातों को जिन में ये इख्तेलाफ़ करते हैं ज़ाहिर कर देता है

وَإِنَّهُ ۚ لَهْدَىٰ ۚ وَرَحْمَةً ۚ لِلْمُؤْمِنِينَ

और इसमें भी शक नहीं कि ये कुरान ईमानदारों के वास्ते अज़सरतापा हिदायत व रहमत है

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ

(ऐ रसूल) बेशक तुम्हारा परवरदिगार अपने हुक्म से उनके आपस (के झगड़ों) का फैसला कर देगा और वह (सब पर) ग़ालिब और वाक्फ़िकार है

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ

तो (ऐ रसूल) तुम खुदा पर भरोसा रखो बेशक तुम यकीनी सरीही हक़ पर हो

إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا ۖ مُدْبِرِينَ

बेशक न तो तुम मुर्दों को (अपनी बात) सुना सकते हो और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हो (खासकर) जब वह पीठ फेर कर भाग खड़े हो

وَمَا أَنْتَ بِهَدِيَ الْعُمَىٰ عَنْ ضَلَّالَتِهِمْ ۚ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ

और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से राह पर ला सकते हो तुम तो बस उन्हीं लोगों को (अपनी बात) सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं

ۚ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً ۖ مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ
كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ

फिर वही लोग तो मानने वाले भी हैं जब उन लोगों पर (क़यामत का) वायदा पूरा होगा तो हम उनके वास्ते ज़मीन से एक चलने वाला निकाल खड़ा करेंगे जो उनसे ये बातें करेगा कि (फलों फला) लोग हमारी आयतों का यकीन नहीं रखते थे

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ ۖ فَوْجًا ۖ مِّمَّنْ يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत से एक ऐसे गिरोह को जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे (ज़िन्दा करके) जमा करेंगे फिर उन की टोलियाँ अलहदा अलहदा करेंगे

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ أَكَذَّبْتُمْ بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا ۖ بِهَا عِلْمًا أَمْ آذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

यहाँ तक कि जब वह सब (खुदा के सामने) आएँगे और खुदा उनसे कहेगा क्या तुम ने हमारी आयतों को बगैर अच्छी तरह समझे बूझे झुठलाया-भला तुम क्या क्या करते थे और चूँकि ये लोग ज़ुल्म किया करते थे

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا ۖ فَهُمْ لَا يَنْطِقُونَ

इन पर (अज़ाब का) वायदा पूरा हो गया फिर ये लोग कुछ बोल भी तो न सकेंगे

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

क्या इन लोगों ने ये भी न देखा कि हमने रात को इसलिए बनाया कि ये लोग इसमें चैन करें और दिन को रौशन (ताकि देखभाल करे) बेशक इसमें ईमान लाने वालों के लिए (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلُّ أَتَوْهُ دُخْرِينَ

और (उस दिन याद करो) जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो जितने लोग आसमानों में हैं और जितने लोग ज़मीन में हैं (गरज़ सब के सब) दहल जाएंगे मगर जिस शख्स को खुदा चाहे (वो अलबत्ता मुतमइन रहेगा) और सब लोग उसकी बारगाह में ज़िल्लत व आजिज़ी की हालत में हाज़िर होंगे

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً ۚ وَهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ

और तुम पहाड़ों को देखकर उन्हें मज़बूर जमे हुए समझते हो हालांकि ये (क़यामत के दिन) बादल की तरह उड़े उड़े फ़िरेगें (ये भी) खुदा की कारीगरी है कि जिसने हर चीज़ को खूब मज़बूत बनाया है बेशक जो कुछ तुम लोग करते हो उससे वह खूब वाकिफ़ है

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ ۚ خَيْرٌ ۚ مِّنْهَا وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ ۚ يَوْمَئِذٍ ءَامِنُونَ

जो शख्स नेक काम करेगा उसके लिए उसकी जज़ा उससे कहीं बेहतर है और ये लोग उस दिन ख़ौफ व ख़तरे से महफूज़ रहेंगे

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

और जो लोग बुरा काम करेंगे वह मुँह के बल जहन्नुम में झोक दिए जाएंगे (और उनसे कहा जाएगा कि) जो कुछ तुम (दुनिया में) करते थे बस उसी का जज़ा तुम्हें दी जाएगी

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ ۥ كُلُّ شَيْءٍ ۥ ۥ وَأُمِرْتُ أَنْ
أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ

(ऐ रसूल उनसे कह दो कि) मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के मालिक की इबादत करूँ जिसने उसे
इज्जत व हुरमत दी है और हर चीज़ उसकी है और मुझे ये हुक्म दिया गया कि मैं (उसके) फरमाबरदार बन्दों में से हूँ

وَأَنْ أَتْلُوا ۥ الْقُرْآنَ ۥ فَمَنْ أَهْتَدَىٰ فَأِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۥ ۥ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا
أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ

और ये कि मैं कुरान पढ़ा करूँ फिर जो शख्स राह पर आया तो अपनी ज़ात के नफे के वास्ते राह पर आया और जो गुमराह
हुआ तो तुम कह दो कि मैं भी एक एक डराने वाला हूँ

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ ءَايَتِهِ ۥ فَتَعْرِفُونَهَا ۥ وَمَا رَبُّكَ بِغَفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

और तुम कह दो कि अल्हमदोलिल्लाह वह अनकरीब तुम्हें (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखा देगा तो तुम उन्हें पहचान
लोगे और जो कुछ तुम करते हो तुम्हारा परवरदिगार उससे गाफिल नहीं है